कोविड-19 महामारी के दौरान भारत सहित वैश्विक स्तर पर विद्यालयी शिक्षा में हुए प्रयासों एवं बदलावों का विश्लेषण

संध्या संगई*

कोविड-19 महामारी वर्तमान पीढ़ी के लिए एक विचित्र अनुभव लेकर आई है। कोई भी कार्यक्षेत्र इसके प्रभाव से अछूता नहीं रहा है। शिक्षा के क्षेत्र में होने वाले परिवर्तनों तथा चुनौतियों के लिए कोई भी हितधारक मानसिक रूप से तैयार नहीं था। अचानक मार्च, 2020 में देश के प्रधानमंत्री द्वारा तालाबंदी (लॉकडाउन) की घोषणा कर दी गई और यह बताया गया कि महामारी के फैलाव को रोकने के लिए आवश्यक है कि लोगों के बीच मेल-मिलाप को बंद किया जाए तथा अन्य सावधानियाँ भी बरती जाएँ। जैसे-जैसे महामारी की पहली लहर का प्रभाव कम हुआ, व्यापारिक प्रतिष्ठान तथा कार्यालय आदि खुलने लगे, लेकिन विद्यालयों पर रोक नहीं हटाई गई। कुछ ही समय बीता कि दूसरी लहर आ गई जो पहली लहर की अपेक्षा अधिक भयावह तथा घातक थी। फिर से लॉकडाउन लगा और समस्त शैक्षिक व्यवस्था ऑनलाइन एवं 'दूरस्थ माध्यमों' पर निर्भर हो गई अर्थात् प्रौद्योगिकी का प्रयोग ही एकमात्र विकल्प था। इस महामारी में विद्यालयी शिक्षा अंतर्राष्ट्रीय रूप से सर्वाधिक प्रभावित रही। इन परिस्थितियों में विद्यालयी शिक्षा पर आवश्यकता आधारित अनेक यथासंभव प्रयास एवं प्रयोग किए गए ताकि सीखने-सिखाने में नुकसान को कम किया जा सके। इस हेतु भारत सहित विश्व के कई देशों में किए गए प्रयोग बच्चों की पढ़ाई-लिखाई को यथासंभव निरंतर जारी रखने के लिए उपयोगी रहे। अत: यह लेख ऐसे ही विविध प्रयासों एवं पहलों को प्रस्तुत करता है।

कोविड-19 महामारी का यह वैश्विक संकट हमारी शिक्षा व्यवस्था के लिए एक असाधारण समय रहा है। इस दौरान हुए अनुभवों के आधार पर हम यह सीखने का प्रयास कर रहे हैं कि शिक्षा प्रणाली, नीतिगत प्रक्रियाएँ, प्रबंधक, प्रशासक, अध्यापक, विद्यार्थी और परिवार इन अप्रत्याशित परिस्थितियों में कैसे अनुकूलनीय हो सकते हैं। यह लेख दूरस्थ अधिगम समाधानों (रिमोट लर्निंग सोल्यूशन) की प्रभावशीलता को समझने के लिए विभिन्न देशों में किए गए प्रयोगों के अध्ययन से प्राप्त प्रमुख निष्कर्षों को उजागर करता है। विभिन्न देशों में किए गए प्रयोगों में अध्यापकों द्वारा उठाए गए त्वरित कदमों की अहम भूमिका रही है, जिसका आधार उनके द्वारा बदली हुई परिस्थितियों में सोचे गए मानवीय संबंध तथा संवाद रहे। महामारी के दौर में अध्यापकों की भूमिका तथा उनके द्वारा किए जा रहे शिक्षण में

* *प्रोफेसर,* प्रारंभिक शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली 110 016

© NCERT not to be republished

निरंतर परिवर्तन आ रहा है, जो पूर्ववत स्थितियों से बहुत विविध एवं लचीले हैं। इस लेख में विद्यालयी शिक्षा पर भारत सहित अन्य देशों में किए गए कुछ प्रयोगों की जानकारी साझा की गई है, जो विभिन्न शैक्षिक परिस्थितियों में दूरस्थ शिक्षण को सुगम बनाने में उपयोगी सिद्ध हो सकती है।

महामारी में अध्यापकों की भूमिका में बदलाव

कोविड-19 महामारी के कारण दो महत्वपूर्ण बदलाव आए हैं। पहला बदलाव, शिक्षणशास्त्रीय अनुकूलन (पैडागॉजिकल अडेब्टेशंस) संबंधी महत्वपूर्ण प्रयोग हुए हैं, क्योंकि पारंपरिक व्याख्यान (व्यक्तिगत) मॉडल दूरस्थ सीखने के परिवेश में उचित रूप से समायोजित नहीं होते हैं। शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में शिक्षण के विविध माध्यमों का उपयोग किया जाता है, जैसे— रेडियो, टीवी, मोबाइल, ऑनलाइन प्लेटफॉर्म आदि। अध्यापकों को अपनी शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाओं को अनुकूलित करने और विद्यार्थियों को सीखने की प्रक्रिया से जोड़े रखने के लिए रचनात्मक होने की आवश्यकता है। वर्तमान समय में प्रत्येक विद्यार्थी का घर एक कक्षा बन गया है, जो विद्यार्थियों को सीखने में सहयोग करता है, तथा सीखने की प्रक्रिया को सुदृढ़ करता है। कुछ देश इस प्रक्रिया में अध्यापकों का सहयोग कर रहे हैं तथा उन्हें यथोचित सुविधाएँ भी उपलब्ध करा रहे हैं। उदाहरण के लिए, सिएरा लियोन, जहाँ पर रिमोट लर्निंग (सुदूर अधिगम) का मुख्य माध्यम रेडियो है। विद्यार्थियों के लिए एक 'लाइव' चैनल और टोल-फ्री फोन सुविधा उपलब्ध है, जिसका प्रयोग वे रेडियो पाठों के प्रश्न करने और समय-सारणी के अनुसार अध्यापकों को फोन करने के लिए करते हैं। इस प्रकार के नियोजन से बच्चों को अपने परिवार की दैनिक कार्यों में सहायता करने का समय मिलता है तथा उनके पढ़ने व सीखने का प्रयास भी निरंतर जारी रहता है (बैरोन व अन्य, 2021)।

दूसरा बदलाव, कोविड-19 महामारी के दौरान अध्यापक किस प्रकार अपने समय को विद्यार्थियों के साथ जुड़ने, शिक्षण और प्रशासनिक कार्यों के बीच विभाजित करते हैं। इस पर ब्राजील में इंस्टिट्यूट ऑफ पेनिनसुला द्वारा एक सर्वेक्षण किया गया। इस सर्वेक्षण के परिणाम दर्शाते हैं कि 83 प्रतिशत अध्यापकों ने ऑनलाइन माध्यम से पढ़ाने के लिए विचार नहीं किया, 67 प्रतिशत अध्यापक चिंतित थे, 38 प्रतिशत अध्यापक अपने आप को थका हुआ महसूस करते थे, और केवल 10 प्रतिशत या उससे कम अध्यापक संतुष्ट थे। इस महामारी के दौरान विद्यार्थी-अध्यापक संवाद के लिए लचीलापन और अधिक समय की आवश्यकता पर भी बल दिया गया। हमारे देश में शुरुआत में जब लॉकडाउन लगा था तो शायद किसी ने भी यह कल्पना नहीं की थी कि इतनी लंबी अवधि तक (लगभग दो अकादमिक सत्र) विद्यालय बंद रहेंगे। परंतु हमारे अध्यापकों ने विद्यार्थियों की पढ़ाई जारी रखने के लिए अपनी ओर से पूर्ण प्रयास किए (बैरोन व अन्य, 2021)।

अंतर्राष्ट्रीय शैक्षिक व्यवस्थाएँ एवं अध्यापकों की भूमिका

यूनेस्को, यूनिसेफ और विश्व बैंक (2020) द्वारा आयोजित कोविड-19 महामारी से निपटने के लिए राष्ट्रीय प्रयासों पर विभिन्न देशों की शिक्षा व्यवस्थाओं का सर्वेक्षण किया गया। इस सर्वेक्षण में पाया गया कि लगभग 90 प्रतिशत देशों ने शिक्षा व्यवस्था संबंधी दिशा निर्देशों को साझा करते हुए अध्यापकों की सहायता की। इन दिशा निर्देशों में

© NCERT not to be republished

कुछ बिंदुओं पर विशेष बल दिया गया, जैसे— विद्यार्थियों को फीडबैक प्रदान करना, बच्चों की देखभाल करने वालों के साथ निरंतर संप्रेषण व संवाद बनाए रखना तथा सीखने की प्रगति पर नजर रखने के लिए स्थानीय शिक्षा इकाई को रिपोर्ट करना। इस हेतु कुछ राष्ट्रों ने अलग-अलग तरीके अपनाए; उदाहरण के लिए, कोस्टा रिका ने स्वायत्त कार्य के लिए एक गाइड का निर्माण किया, जो वस्तुत: विभिन्न शैक्षिक संसाधनों के साथ बनाया गया एक टूलबॉक्स था। ब्राज़ील में साओ पाऊलो राज्य ने, अपने द्वारा बनाए गए एक मोबाइल एप्लीकेशन की सहायता से नियमित रूप से सचिव तथा अध्यापकों के बीच दो घंटे की अंतर्क्रिया की। इन उपकरणों और अंतर्क्रिया ने राष्ट्रों को अध्यापकों की चिंताओं को बेहतर ढंग से समझने तथा दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रमों को समायोजित करने के लिए अध्यापकों के साथ संवाद की एक खुली व्यवस्था स्थापित की। अध्यापकों ने इन दिशानिर्देशों और अनुशंसाओं को लागू करना शुरू किया। साथ ही, उन्होंने दूरस्थ रूप से विद्यार्थियों को शिक्षित करने और फीडबैक प्रदान करने, प्रशासनिक रिपोर्ट भरने तथा अपने परिवारों की देखभाल करने में संतुलन स्थापित किया।

कुछ राष्ट्रों ने शुरू में ही यह मान लिया था कि उनकी सुविचारित अध्यापक सहायता प्रणालियाँ अध्यापकों में उत्साह उत्पन्न कर रही हैं। पेरू के शिक्षा मंत्रालय ने अध्यापकों का फीडबैक प्राप्त किया तथा अध्यापकों के प्रशासनिक कार्यभार को कम करने के लिए दिशानिर्देशों में बदलाव किया। ब्राजील में मिनस गेरैस राज्य ने प्रत्येक कक्षा के बाद निर्धारित समय के दौरान अध्यापक तथा विद्यार्थी के बीच अंतर्क्रिया को प्रोत्साहित करने के लिए मोबाइल एप्लीकेशन 'कोनेक्सो एस्कोला' विकसित किया, ताकि ऐसी स्थिति से बचा जा सके जिसमें विद्यार्थियों ने दिन भर व्हाट्सएप या टेक्स्ट मैसेज द्वारा अध्यापकों से संपर्क किया हो। उरुग्वे में, अध्यापकों से प्रशासनिक जानकारी भरने के लिए 'GURI', एक डिजिटल प्लेटफॉर्म निर्मित किया गया, जिसका उपयोग अध्यापकों द्वारा विद्यार्थियों की उपस्थिति और ग्रेड जैसी जानकारी को रिपोर्ट करने के लिए किया गया (बैरोन व अन्य, 2021)।

इन दिशा निर्देशों और उपकरणों को प्रदान करने के अतिरिक्त, कुछ राष्ट्रों ने मौजूदा पेशेवर विकास कार्यक्रमों (प्रोफेशनल डेवलपमेंट प्रोग्राम्स), जो इस महामारी से पहले ही प्रयोग में लाए जा रहे थे, का लाभ उठाया। नाइजीरिया में ईदो राज्य ने कक्षा में डिजिटल तकनीक का प्रभावी ढंग से उपयोग करने के लिए, पिछले दो वर्षों में ईदोबेस्ट कार्यक्रम के अंतर्गत सभी 11 हजार प्राथमिक स्कूल अध्यापकों को प्रशिक्षित किया। कोविड-19 महामारी के दौरान, यह सेवाकालीन अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम फेस-टू-फेस से दूरस्थ प्रशिक्षण में परिवर्तित हो गया। इसी प्रकार, उरुग्वे में, सेवाकालीन अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों ने दूरस्थ शैक्षणिक सहायता प्रदान करने के लिए एक मौजूदा अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम को ऑनलाइन प्रारंभ किया और सेइबल ने अपने अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम और मुक्त शैक्षिक संसाधन भंडार को मजबूत किया। उरुग्वे के 90 प्रतिशत से अधिक अध्यापक कोविड-19 महामारी के दौरान प्राप्त दूरस्थ प्रशिक्षण से संतुष्ट थे, कुछ अध्यापकों ने आगे भी प्रशिक्षण की आवश्यकता की माँग की। भारत में भी मौजूदा अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम 'निष्ठा' को ऑनलाइन प्रारंभ किया गया।

© NCERT not to be republished

बदलती परिस्थितियों में प्रौद्योगिकी का उपयोग तथा प्रभाव

कोविड-19 महामारी का सामना करते हुए, विभिन्न देशों ने विद्यार्थियों के सीखने की प्रक्रिया में अध्यापकों को बेहतर सहायता देने के लिए उच्च-तकनीकी और निम्न-तकनीकी वाले दृष्टिकोणों को जोड़ा। उदाहरण के लिए, कंबोडिया में, शिक्षा के नेतृत्वकर्ताओं ने देश में मोबाइल फोन की उच्च पहुँच का लाभ उठाते हुए एक रणनीति तैयार की, जिसमें एसएमएस, मुद्रित हैंडआउट्स और अध्यापकों की निरंतर प्रतिक्रियाएँ शामिल हैं। सीखने के कार्यक्रमों तक किस प्रकार पहुँचा जाए, यह इसके बारे में जानकारी देता है। यह विद्यार्थियों तक प्रिंट शिक्षण सामग्री की पहुँच सुनिश्चित करता है तथा दूरस्थ शिक्षा गतिविधियों की निगरानी और विद्यार्थियों को परामर्श देने के लिए अध्यापकों द्वारा घर का दौरा कार्यक्रम भी शामिल करता है। अध्यापकों से यह भी अपेक्षा की जाती है कि वे विद्यार्थियों को प्रत्येक सप्ताह प्रिंट अध्ययन सामग्री प्रदान करें तथा जाँचे गए कार्यपत्रक प्रदान करें तथा अगले सप्ताह के लिए नए कार्यपत्रक दें।

विश्व बैंक के सफल अध्यापकों के मंच ने 'प्रौद्योगिकी के प्रभावी उपयोग' पर कुछ प्रमुख सिद्धांत निर्धारित किए हैं, जिनका प्रयोग अध्यापकों की प्रभावी भूमिका को सुनिश्चित करने के लिए किया जा सकता है। साथ ही, उनके अनुभव तथा कौशल का उपयोग विद्यार्थियों को अधिक सहायता प्रदान करने के लिए किया जा सकता है। यह सिद्धांत हमारे देश में भी उपयोग किए जा सकते हैं। हमारे देश के अधिकतर राज्यों में भी कोविड-19 महामारी के दौरान बनाई गई रणनीतियों में प्रौद्योगिकी के उचित उपयोग पर विभिन्न प्रकार के प्रयास किए जा रहे हैं। (बैरोन व अन्य 2021)।

महामारी के दौरान भारत में किए गए प्रयास

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 द्वारा प्रौद्योगिकी को बढ़ावा

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (एन.ई.पी.) शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण परिवर्तनों की अनुशंसा करती है। इसमें समय के साथ-साथ विषय-वस्तु तथा सीखने-सिखाने के तरीकों को बदलने का सुझाव दिया गया है। आज के समय में प्रौद्योगिकी मानव जीवनशैली का अभिन्न अंग है। अत: *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* में स्पष्ट रूप से लिखा गया है कि प्रौद्योगिक हस्तक्षेपों का मुख्य उद्देश्य शिक्षण-अधिगम और आकलन प्रक्रियाओं को बेहतर बनाना, अध्यापकों की तैयारी एवं पेशेवर विकास में सहयोग करना, शैक्षिक पहुँच को बढ़ाना, शैक्षिक नियोजन, प्रबंधन एवं प्रशासन को सरल एवं व्यवस्थित करना, जिसमें प्रवेश, उपस्थिति, मूल्यांकन संबंधी प्रक्रियाएँ आदि सम्मिलित हैं। संपूर्ण शिक्षा व्यवस्था को अनिवार्य रूप से रूपांतरित करने में तेजी से उभरती परिवर्तनशील प्रौद्योगिकी पर भी विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है *(एन.ई.पी. 2020, 23.5)*।

कोविड-19 महामारी से उत्पन्न विषम परिस्थिति में हमारे देश ने शिक्षा के क्षेत्र में सराहनीय कार्य किया। राष्ट्र तथा राज्य स्तर पर कार्य करने वाले मुख्य संस्थानों एवं संगठनों ने विद्यार्थियों के सीखने-सिखाने की प्रक्रिया तथा अध्यापकों की पेशेवर क्षमता के विकास के लिए कई बदलाव किए। उनमें से कुछ बदलाव इस प्रकार हैं—

© NCERT not to be republished

निष्ठा

निष्ठा (निष्ठा– स्कूल प्रमुखों और शिक्षकों की समग्र उन्नति के लिए राष्ट्रीय पहल) कार्यक्रम को 'दीक्षा' पोर्टल के माध्यम से ऑनलाइन किया गया। *निष्ठा* पूर्व-प्राथमिक, प्रारंभिक और माध्यमिक स्तर के अध्यापकों के प्रशिक्षण के लिए तैयार किया गया एक अनूठा कार्यक्रम है। इस कार्यक्रम की शुरुआत वर्ष 2019–20 में की गई थी। प्रत्येक राज्य ने अपने संपूर्ण अध्यापकों एवं विद्यालय प्रमुखों को प्रशिक्षित करने के लिए 'राज्य संसाधन समूह' बनाए तथा 'मुख्य संसाधक व्यक्तियों' की पहचान की गई। इन मुख्य संसाधक व्यक्तियों का व्यापक प्रशिक्षण रा.शै.अ.प्र.प. तथा नीपा के विषय विशेषज्ञों द्वारा किया जा रहा है, जिसका आधार न केवल विशेष रूप से तैयार किए गए विभिन्न विषयों पर मॉड्यूल हैं, वरन् विभिन्न कार्यकलापों के आधार पर लाइव सत्र भी आयोजित किए जाते हैं, जैसे— किस प्रकार 'कला समावेशी शिक्षा' तथा 'स्वास्थ्य एवं कल्याण शिक्षा संबंधी' पहलुओं तथा अन्य शैक्षिक सरोकारों को विद्यालयी विषयों की शिक्षा में समावेशित किया जाए। लॉकडाउन (मार्च 2020) लगने से पहले यह प्रशिक्षण प्रत्यक्ष रूप से (फेस-टू-फेस) चल रहा था। लेकिन कोविड-19 महामारी की विषम परिस्थितियों के कारण रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा इसे 'दीक्षा' पोर्टल के माध्यम से ऑनलाइन प्रारंभ किया गया। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम राज्यों की माँग के आधार पर संचालित किया जा रहा है।

पीएम ई-विद्या कार्यक्रम

पीएम ई-विद्या कार्यक्रम 24×7 चलने वाला चैनल है, जिसका मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से शिक्षित करना है, ताकि विद्यालय बंद होने के कारण बच्चों की शिक्षा प्रभावित न हो। इस कार्यक्रम से अपेक्षित अनेक लाभ हैं, जैसे— विद्यार्थियों को घर बैठे शिक्षा मिलना, सीखने की जरूरतों का एक ही स्थान पर समाधान होना, ई-सामग्री के माध्यम से अध्ययन को सुविधाजनक बनाना तथा टीवी पर शिक्षा के लिए समर्पित कक्षावार विशेष चैनल द्वारा उन विद्यार्थियों की मदद करना, जिनकी पहुँच इंटरनेट तक नहीं है। यह कार्यक्रम राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् तथा राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय संस्थान द्वारा संचालित किया जा रहा है। कक्षावार पाठ्यपुस्तकों पर आधारित विभिन्न ऑडियो-वीडियो कार्यक्रम विकसित किए गए हैं, ताकि निर्बाध रूप से प्रसारण किया जा सके। इसके अतिरिक्त कक्षा 1 से 12 तक की कक्षाओं के लिए विभिन्न विषयों से संबंधित लाइव सत्र भी प्रसारित किए जा रहे हैं। ताकि विद्यार्थी, अध्यापक, अभिभावक तथा अन्य हितधारक को शिक्षण-अधिगम से जुड़ी समस्याओं के समाधान हेतु सहायता प्रदान की जा सके।

वैकल्पिक अकादमिक कैलेंडर

जैसा कि हम सब जानते हैं, वर्तमान में आनंदपूर्ण एवं रोचक तरीके से शिक्षा प्रदान करने के लिए विभिन्न तकनीकी उपकरण और सोशल मीडिया एप्लीकेशंस उपलब्ध हैं, जिनका उपयोग विद्यार्थी घर पर रहकर सीखने के लिए कर सकते हैं। विद्यालयी शिक्षा के विभिन्न स्तरों को ध्यान में रखते हुए राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा अकादमिक वर्ष 2020–21 तथा 2021–22 के लिए सभी विद्यार्थियों के सीखने के लिए साप्ताहिक योजना पर आधारित वैकल्पिक अकादमिक कैलेंडर विकसित

© NCERT not to be republished

किए गए हैं। देश के सभी राज्य एवं केंद्र शासित प्रदेश इन वैकल्पिक अकादमिक कैलेंडरों को क्रियान्वित कर रहे हैं तथा उन्होंने इसे अपनी आवश्यकतानुसार अनुकूलित भी किया है।

यह 'वैकल्पिक अकादमिक कैलेंडर' अध्यापकों एवं अभिभावकों का मार्गदर्शन करता है। वर्तमान में कोविड-19 महामारी के संकट में सभी अध्यापक बदली हुई परिस्थितियों में पाठ्यक्रम को किस प्रकार संचालित करें? इस पर मार्गदर्शन चाहते हैं। ऐसे में यह कैलेंडर उन्हें सप्ताह-वार शिक्षण के लिए सुझाव देता है। इसे प्रत्येक कक्षा के लिए तथा प्रत्येक विषय के लिए तैयार किया गया है। 'सीखने के प्रतिफलों' के आधार पर विद्यार्थियों को शिक्षण-अधिगम में किस प्रकार सहायता की जाए? इस संबंध में विभिन्न क्रियाकलाप सुझाए गए हैं, जिनकी सहायता से वह घर पर रहकर अभिभावकों एवं अध्यापकों के मार्गदर्शन में सुचारु रूप से अपनी पढ़ाई कर सकते हैं।

हमारे देश में एक बड़ा वर्ग उन लोगों का है, जिनके पास घर पर सीखने के लिए डिजिटल संसाधनों की सीमित सुविधाएँ उपलब्ध हैं। ऐसे विद्यार्थी भी हैं, जिनके घर में कोई भी तकनीकी साधन उपलब्ध नहीं है, जिससे लॉकडाउन की अवधि में उन तक पहुँचना और भी कठिन हो गया था। इन चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों के बावजूद ऐसे विद्यार्थियों तक 'पहुँच' सुनिश्चित करने के लिए अकादमिक सत्र 2021–22 के लिए वैकल्पिक अकादमिक कैलेंडर में विभिन्न वैकल्पिक उपाय सुझाए गए हैं।

सुदूर एवं दुर्गम स्थानों में विद्यार्थियों तक पहुँचने के लिए अध्यापकों द्वारा की गई पहल

- जिन विद्यार्थियों के पास कोई भी तकनीकी साधन नहीं है, उन्हें स्थानीय पुस्तकालयों, आँगनबाड़ियों, अक्षय केंद्रों आदि सहित अपने पड़ोस में सार्वजनिक अध्ययन केंद्रों तक पहुँचने के लिए प्रोत्साहित किया गया, जहाँ ऑनलाइन कक्षाओं के लिए कंप्यूटर एवं आवश्यक उपकरणों या साधनों की व्यवस्था की गई थी। विद्यार्थी, कोविड-19 नियमों का पालन करते हुए समय-सारणी के अनुसार सार्वजनिक अध्ययन केंद्रों पर पहुँचे।
- कई राज्यों में पाया गया कि अध्यापक शिक्षार्थियों की पढ़ाई को सुविधाजनक बनाने के लिए उन तक पहुँचे। अध्यापकों ने सुदूर एवं दुर्गम स्थानों की यात्रा की तथा स्थानीय समुदाय के सदस्यों द्वारा उपलब्ध किए गए लाउडस्पीकर का उपयोग शिक्षण-अधिगम गतिविधियों को संचालित करने एवं गृहकार्य सौंपने के लिए किया। शिक्षार्थियों को प्रासंगिक एवं उपयोगी सामग्री दिखाने के लिए अध्यापकों ने अपने मोबाइल फोन का भी उपयोग किया।
- कुछ स्थानों पर लाउडस्पीकर लगी वैन चलाई गई, जहाँ विज्ञान के अध्यापकों ने माइक्रोफोन पर पाठ पढ़ाया। अध्यापकों ने विज्ञान के विभिन्न प्रयोगों का प्रदर्शन किया। सामुदायिक विद्यालयों की इस अवधारणा ने वास्तव में कई विद्यार्थियों को उनकी सीखने की प्रक्रिया को जारी रखने में मदद की।

© NCERT not to be republished

- कई राज्य सरकारों ने विद्यार्थियों की शिक्षण अधिगम से जुड़ी शंकाओं को दूर करने हेतु (जब भी उन्हें आवश्यकता हो, के लिए) टोल फ्री कॉल सेंटर (इंटरएक्टिव वॉयस रिस्पांस यानी आई.वी.आर.एस.) की सुविधा का प्रावधान किया है। इस सुविधा ने शिक्षार्थियों को अपने अध्यापकों के साथ अंतर्क्रिया करने एवं सीखने में अंतराल को दूर करने के लिए प्रेरित किया।
- कुछ राज्यों में विद्यार्थियों को गृहकार्य दिए गए, जिन्हें वे सप्ताह में पूरा करके विद्यालय प्रशासन में प्रबंधन समिति के पास जमा करेंगे। अध्यापक समिति से एकत्र करके इन सभी की जाँच करेंगे और प्रबंधन समिति को फीडबैक देंगे, जो आगे विद्यार्थियों को सूचित करेगी। यदि संभव हो तो विद्यार्थी व अध्यापक आपसी वार्तालाप से या मिलकर संदेह का निवारण कर सकते हैं।

(संदर्भ— वैकल्पिक अकादमिक कैलेंडर, 2021–22)

निष्कर्ष

मजबूत शिक्षा प्रणाली का निर्माण करने के लिए विभिन्न देशों को उन शिक्षण-अधिगम पहलों को लागू करने की आवश्यकता होगी, जो ऑनलाइन शिक्षा के दौरान प्रभावी सिद्ध हुई हैं तथा उन्हें नियमित शिक्षा प्रणाली में समावेशित किया सकता है। दूरस्थ (रिमोट) और मिश्रित (ब्लेंडिड) शिक्षा की पूरी क्षमता का दोहन करने के लिए अध्यापकों को सशक्त बनाना, उनमें आवश्यक कौशल विकसित करना और उनकी क्षमता निर्माण में निवेश करना महत्वपूर्ण है। अध्यापकों के समय को प्रशासनिक कार्यों से मुक्त करना भी उतना ही महत्वपूर्ण है। अकादमिक रूप से प्रभावी क्या है? इस पर ध्यान केंद्रित करना होगा, क्योंकि कोविड-19 महामारी और औपचारिक रूप से विद्यालय बंद होने से अध्यापकों की भूमिका बदल गई है। अत: अध्यापकों के लिए यथासंभव समुचित सहयोग सुनिश्चित करने और उन्हें मानसिक रूप से सक्षम बनाने के लिए सामाजिक-भावनात्मक निगरानी और मनो-सामाजिक सहयोग प्रदान करने की आवश्यकता है।

संदर्भ

मारिया बैरोन, क्रिस्टोबल कोबो, अल्बर्टो मुनोज-नजर और इनाकी सांचेज सियारुस्ता. 2021. *द चेंजिंग रोल ऑफ टीचर्स एंड टैक्नालोजीस एमिडिस्ट द कोविड-19 पैनडैमिक — की फाइनडिंग्स फ्रॉम ए क्रॉस कन्ट्री स्टडी*. एजुकेशन फॉर ग्लोबल डेवलपमेंट. 3 अगस्त, 2021 को https://blogs.worldbank.org/education/changing-role-teachers-and-technologies-amidst-covid-19-pandemic-key-findings-cross से प्राप्त किया गया है.

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्. 2021. *वैकल्पिक अकादमिक कैलेंडर— प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के लिए*. रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली.

मानव संसाधन विकास मंत्रालय. 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. भारत सरकार, नयी दिल्ली.

© NCERT not to be republished